नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में महर्षि अरविन्द घोष की समन्वित शिक्षा एवं स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा सम्बन्धी शैक्षिक चिन्तन का समीक्षात्मक अध्ययन

IIMT UNIVERSITY
MEERUT

शिक्षा शास्त्र में पी–एच0डी0 उपाधि हेतु
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ
को प्रस्तुत
शोध रूपरेखा

शोध पर्यवेक्षकः
डा. संजीव कुमार
आचार्य, कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन,
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ।

शोधार्थिनीः
सोनिया शर्मा
नामांकन संख्याः**IIMTU/1971902**

शोध केन्द्र
कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ
वर्षः 2021

1. प्रस्तावना

विशिष्ट व प्रत्यक्ष रूप से दर्शन का अर्थ अमूर्त चिन्तन करने के उस प्रयास से है जिसके द्वारा आत्मा ईश्वर प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवन का रहस्य उद्घाटन किया जाता है। इस दृष्टि से मनुष्य क्या है? जीवन क्या है? वास्तविक जीवन का उद्देश्य क्या है? संसार की प्रकृति क्या है? इस प्रकार की बातों की खोज करके उस चिरन्तन सत्य का उद्घाटन करना दर्शन का मुख्य विषय है। दूसरे शब्दों में उक्त प्रश्नों के अध्ययन को ही दर्शन कहते हैं चूंकि ये सभी बातें अत्यन्त गूढ़ हैं इसलिये इनके विषय में चिन्तन मनन करने के लिये दार्शनिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। हैंडरसन ने दर्शन का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है– ''दर्शन ऐसी सबसे जटिल समस्याओं का कठिन, अनुशासित तथा सावधानी के साथ किया हुआ विश्लेषण है जिनका मानव ने कभी अनुभव किया हो।''

व्यापक रूप से दार्शनिकों का कोई भिन्न वर्ग नहीं होता है। वे सभी व्यक्ति दार्शनिक हैं जो सत्य की किसी न किसी रूप में खोज करते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कोई न कोई दर्शन अवश्य होता है और सभी व्यक्ति अपने जीवन–दर्शन के अनुरूप जगत के सम्बन्ध में अपनी धारणा व्यक्त करते हैं तथा अपनी–अपनी विचारधारा तथा सिद्धान्त बना लेते हैं। दर्शन के क्षेत्र में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। दर्शन सिद्धान्तों की व्याख्या करता है किन्तु यह सिद्धान्त शिक्षा की देन है। शिक्षा द्वारा हम व्यवहारिक रूप से कुछ मान्यताएँ निश्चित करते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया से गुजरते हुए हम शिक्षा के कार्यो का सिद्धान्तीकरण करते हैं। हम शैक्षिक क्रियाओं पर विचार करते हैं यह विचारीकरण दर्शन को जन्म देता है। उच्च कोटि के दार्शनिक

शिक्षा व दर्शन के इस पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध को समझ लेते हैं, कि उनकी दार्शनिक मान्यताओं को शिक्षा द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचना से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कोई भी शिक्षा दर्शन मूलभूत वैज्ञानिक तथ्यों के उपर्युक्त ज्ञान तथा शैक्षिक क्रियाओं को प्रेरित करने वाले लक्ष्यों तथा उद्देश्यों पर आधारित है। शैक्षिक कार्यक्रमों की योजनाओं सिद्धान्तों तथा संगठन के मूल्यांकन को भी शिक्षा दर्शन में विशेष महत्व है।

2. नई शिक्षा नीति 2020

वर्ष 1986 में घोषित भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की 34 वर्षों की लम्बी यात्रा के पश्चात भारत की नई शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 में घोषित की गई। इस नई शिक्षा नीति की व्यापकता असीमित है जिसमें भारत को विश्वगुरू बनाने की संकल्पना को उद्घोषित किया गया है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा के विभिन्न आयामों को नवीन पद्धति तथा नये कलेवर में प्रस्तुत करने के साथ ही इस नई शिक्षा नीति में समन्वित शिक्षा तथा मानव निमार्ण शिक्षा की संकल्पना को इसके सिद्धान्तों में प्रमुख स्थान दिया गया है। इस नीति के सिद्धान्त क्रम संख्या 5 में कहा गया है—

"सभी ज्ञान की एकता और अखंडण्ता को सुनिश्चित करने के लिए एक बहु—विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु—विषयक (multi-disciplinary) और समग्र शिक्षा का विकास" करना।[1]

इसके आगे सिद्धान्त क्रम संख्या–8 में वर्णित किया गया है–

"नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे, सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्ट्राचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजानिक संपत्ति के शिए सम्मान वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय का सिद्धान्त"।[2]

नई शिक्षा नीति 2020 के विजन में स्पष्ट रूप से कहा गया है– "इस राष्ट्रीय श्क्षिा का विजन भारतीय मूल्यों से विकतसि शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवेत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत और न्यायसंगत ज्ञान समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। नीति में परिकल्पित है कि हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करे। नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए जो मानवाधिकारों, स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें।"[3]

इस प्रकार देखा जाये तो नई शिक्षा नीति 2020 के सिद्धान्तों व विजन में महर्षि अरविन्दों घोष की समन्वित शिक्षा को समग्र शिक्षा के रूप में तथा स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा के सभी पक्षों को सार रूप में सम्मिलित किया गया है।

3. शोध की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान युग में विज्ञान और उन्नति का युग है। इस युग में मानव सुख शान्ति का अनुभव नहीं कर पाता है। वर्तमान शिक्षा का स्वरूप मनुष्य को शान्ति, नैतिकता व मूल्यपरक शिक्षा नहीं दे पा रहा है। ऐसी परिस्थिति में मानव निर्माण शिक्षा तथा समन्वित शिक्षा जैसे प्रत्यक्ष मानव को एक शिक्षा दे सकते हैं तथा मानव को सुखी व मानसिक शांति का मार्ग दिखा सकते हैं।

मानववादी दृष्टिकोण व्यक्तिगत और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है। आर्थिक क्षेत्र में उत्पादकों और उपभोक्ताओं आदि को और पूंजीपतियों के सम्बन्धों में मानववादी दृष्टिकोण विकसित कर सभी के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। महर्षि अरविन्द के अनुसार यह एक बार पहचाने गये सत्य का हमारे आन्तरिक जीवन और बाहरी क्रियाओं में साक्षात्कार के योग्य होना चाहिये जो मानव जीवन के सभी क्षेत्रों के लिये कल्याणकारी हो।

मानववादी एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसमें मानव कल्पना को महत्ता दी गई है तथा इसी के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। मनुष्य ही सब कुछ है वह बुद्धि से समन्वित है तथा ज्ञान गरिमा का अधिकारी है। इस प्रकार मानववाद में मानव को अस्तित्ववान व असीम संभावनाओं से युक्त माना गया है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''मनुष्य के भीतर पाश्विक और दिव्य प्रवृत्तियों के बीच कुछ ऐसा है जो पूर्णतः मानवीय है और उसी को नैतिकता, कला, सौन्दर्य बोध तथा अन्य आचार विचारों का प्रतिमान मानना चाहिये। यह मनुष्य को भावना और विचारों के नये और स्वस्थ क्षितिज तो दे ही सकता है।''

सांस्कृतिक पुनर्जागरण मानववाद की विशेषता है। विश्व बन्धुत्व परोपकारिता कर्त्तव्य परायणता एवं शान्तिप्रियता मानववादी शिक्षा के आदर्श है। स्वामी विवेकानन्द एवं महर्षि अरविन्द ने अपने मानवतावादी दृष्टिकोण से समस्त मानवजाति को ज्ञान का मार्ग दिखाया है।

आज भौतिकवाद अपनी चरम सीमा पर है। मनुष्य का प्रमुख प्रयोजन केवल भौतिक संसाधन जुटाना है और मानवीय मूल्यों, नैतिकता, आध्यात्मिक आदि का ह्रास हुआ है। अतः मानव कल्याण हेतु तथा सुखी भविष्य हेतु महर्षि अरविन्द तथा स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन आवश्यक है।

अतः शोधार्थिनी ने इस नई शिक्षा नीति में सम्मिलित अरविन्दो घोष व स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिंतन का समीक्षात्मक अध्ययन करने का विचार किया है।

4. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

एस0एम0 बाखे (1982)[4] ''लोकमान्य तिलक एवं स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन'', पी—एच0डी0 (शिक्षा), बम्बई विश्वविद्यालय, ने अपने अध्ययन में लोकमान्य तिलक तथा स्वामी विवेकानन्द के कार्यों एवं गतिविधियों के आधार पर राष्ट्रीय सन्दर्भ में इनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है तथा इनके विचारों की तुलना अन्य मनोवैज्ञानिकों मासलों, रोजर्स, फ्रॉम तथा ऑलपोर्ट आदि से की गयी है। तिलक तथा विवेकानन्द ने शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को स्वयं को पहचानने में समर्थ बनाना माना है। बालकों के विषय में इनका विचार है कि वह स्वयं में एक वास्तविकता है। इनके अनुसार शिक्षा का कार्य व्यक्ति में सब योग्यताओं का विकास करना

तथा जीवन का गहन अर्थ निकालना है। शिक्षा पूर्ण वृद्धि के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। यह वास्तव में एक प्रक्रिया है, जो मस्तिष्क से प्रारम्भ होती है। शिक्षक इसी प्रतिरूप के अन्दर छिपी हुई शक्तियों के जगाने तथा बाह्य संसार को इसके लिए साधन के रूप में प्रयोग करने का कार्य करता है। मनुष्य जो कुछ करता है, अपने स्वयं के स्वार्थ से प्रेरित होकर ही करता है। अतः एक शिक्षक के लिए बालक के प्रेरक तत्वों को समझना आवश्यक है। अर्थात् शिक्षक का कार्य बालक को चिन्तन–मनन, तर्क एवं निर्णय करने के योग्य बनाना है। शिक्षक को बालक के सामने किसी भी समस्या को इस प्रकार रखना चाहिए कि वह उसके समस्त पक्षों को समझ सके तथा अपने स्वतन्त्र निर्णय ले सके। तिलक एवं विवेकानन्द के अनुसार शिक्षण व्यवसाय एक श्रेष्ठ व बुनियादी व्यवसाय है और जो व्यवसाय जितना श्रेष्ठ होगा, उत्तरदायित्व उतना ही महान होगा।

सोती, शिवेन्द्र चन्द्र (1984)[5] ''श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन'', पी–एच0डी0 (शिक्षा) मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ, ने अपने शोध पत्र ''एजूकेशनल फिलोसफी ऑफ श्री अरबिन्दो'' में उन्होंने इन तथ्यों पर विचार किया है कि श्री अरविन्द के शैक्षिक विचार वर्तमान परिवेश में कितने सार्थक हैं तथा उनसे हम किस प्रकार लाभान्वित हो सकते हैं। उन्होंने पाया कि श्री अरविन्द जी शिक्षा द्वारा व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर बल देते थे। उनका मानना था कि शिक्षा में बालक को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, जिससे उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो सके। उनके अनुसार शिक्षक ही बालक का मार्गदर्शक होना चाहिए, जिससे उसमें राष्ट्रीयता का विकास हो, तभी व्यक्ति और राष्ट्र उन्नति कर सकता है।

पी0 धर (1991)[6] ने अपने अध्ययचन रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि इन दोनों शिक्षाविदों के विचारों, विशेषतः मातृभाषा द्वारा शिक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व, मनोवैज्ञानिक शिक्षक विधियों और बालक के चहुँमुखी विकास का आज की परिस्थितियों में विशेष महत्व है।

एच0 शंकर (1991)[7] ने ''महर्षि अरविन्द एवं रूसो के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर एक अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य महर्षि अरविन्द एवं रूसो के दार्शनिक व शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। यह शोध प्रबन्ध इन शिक्षाविदों से सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण पर आधारित है। महर्षि अरविन्द के अनुसार बालक की प्रच्छन्न शक्ति को बाहर निकालना ही शिक्षा है। ''स्व'' सार्वभौम तथा राष्ट्र में एकता स्थापित करना शिक्षा का कार्य है। इनकी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सम्पूर्णता प्रदान करना तथा दैवीय प्राणी तैयार करना है। ये शिक्षक व शिष्यों के मध्य गहरे व्यक्तिगत सम्बन्धों को स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार बुद्धि के सर्वतोमुखी विकास के लिए धार्मिक व नैतिक शिक्षा आवश्यक है। रूसो ने सर्वप्रथम प्रकृतिवाद का विचार रखा तथा बालक का महत्व बताते हुए बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया और शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार पर सुनियोजित पाठ्यक्रम को अपनाया।

आर0जे0 कौर (1992)[8] ने एक अध्ययन ''श्री अरविन्द एवं महात्मा गाँधी के शिक्षा–दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में सार्थकता'' नामक विषय पर किया। शोध का उद्देश्य श्री अरविन्द और महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन करना था। यह कार्य मुख्यतः

दोनों दार्शनिकों के साहित्य के विश्लेषण पर आधारित है। इसमें शिक्षा–दर्शन के विभिन्न पक्षों–शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि एवं शिक्षक के महत्व के विषय में दोनों दार्शनिकों के विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है और यह निष्कर्ष निकाला गया है कि आज की परिस्थितियों में दोनों शिक्षाविदों का दर्शन अत्यन्त प्रासंगिक है।

शर्मा, कु0 शबनम (1995)[9] ने एक अध्ययन ''स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का आधुनिक भारतीय शिक्षा के संदर्भ में किया तथा इन्होंने अपने शोध में स्वामी दयानन्द व स्वामी विवेकानन्द के चिंतन पर विभिन्न दर्शनों का प्रभाव तत्कालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डाला। इसी के साथ–साथ धार्मिक, सामाजिक तथा समकालीन भारतीय चिन्तन को विवेकानन्द व स्वामी दयानन्द की देन का भी वर्णन किया है।

सुशीला सिरोही (2007)[10] ने एक अध्ययन आधुनिक भारतीय संदर्भ में श्री अरविन्द एवं आचार्य रजनीश के शैक्षिक विचारों की उपादेयता एक तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया तथा इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि (1) सबसे पहले बालक को स्वयं का जानना और विकसित होना है। शिक्षक केवल उसका मार्गदर्शन कर सकता है। (2) शिक्षा विद्यार्थी के विशिष्ट गुणों, सामर्थ्यों तथा विचारों के अनुरूप होनी चाहिए। (3) सच्ची शिक्षा वह है जिसमें बालक अपनी आन्तरिक प्रकृति और सम्भावनाओं को पहचान सके। (4) छात्र को शिक्षालयों में उसे अपनी प्रकृति के अनुरूप विकसित होने की सुविधा दी जानी चाहिए। (5) आचार्य रजनीश शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का रूपान्तरण चाहते थे। उनकी दृष्टि में व्यक्ति ही वह महत्वपूर्ण इकाई है जिसमें कोई क्रान्ति घटित हो सकती है। (6) शिक्षा व्यक्ति को अपने अन्वेषण में सहयोग

देने वाली होनी चाहिए। (7) विद्यालय में अनुशासन बनाये रखने के लिऐ विद्यार्थियों को आदेश न देकर सुझाव दिये जाने चाहिए। (8) शिक्षकों को विद्यार्थियों के सम्मुख उच्च आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए। (9) शिक्षक बच्चों को प्रेम दे। उनके भविष्य की मंगलकामना करे तो स्वतः ही अनुशासन आयेगा जो थोपा हुआ नही होगा और जो बच्चे के विवेक से पैदा होगा।

ह्रदयेश कुमार (2008)[11] स्वामी विवेकानन्द व महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, एम0फिल0, शिक्षा विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ दोनों चिंतकों ने व्यवहारिकता पर अधिक बल दिया है और कहा है कि जब हम आत्मनिर्भर नहीं होगें तो हमारे दशे की तरक्की व हमारा स्वाभिमान जाग्रत नहीं हो सकता है। दोनों चिंतकों ने पाठयक्रम को भारतीय वातावरण के अनुकूल ढालने का प्रयत्न किया है। और इससे से काफी हद तक कामयाब भी हुए हैं। शिक्षण विधियों पर जोर देते हुए कहते हैं कि वे ऐसी होनी चाहिए जो बालक की रूचि के अनुसार व उसके ज्ञान को बढ़ाने वाली हो तथा भारतीय वातावरण के अनुरूप हो शिक्षक पर जोर देते हुए कहा है कि उसको सर्वगुण सम्पन्न होना चाहिए तथा शिक्षार्थी अपने शिक्षकों के सम्मान करने वाले ब्रह्मचारी, सत्य, प्रेम व निर्भीक होने चाहिए और जो अपने जीवन की उच्चतम स्थिति तक ले जाते हुए समाज सेवा व देश सेवा कर सके और अनुशासन पर बोलते हुए कहा कि ऐसा अनुशासन जो अन्दर से जागृत हो जिससे बाह्य दण्ड की आवश्यकता ही न पड़े।

सिंह कृष्ण बहादुर, सिंह जय (2016)[12], शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रीवा, मध्यप्रदेश ने अपने शोध अध्ययन "अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन मूल्यों की उपादेयता का अध्ययन" में निष्कर्षतः पाया कि श्री अरविंद के अनुसार वर्तमान

मानिसकतायुक्त व्यक्ति, विकास का चरम लक्ष्य नहीं है। विकास का लक्ष्य मानसिकता का अतिक्रमण करके मनुष्य को वहाँ ले जाना है, जो संस्कृति, जन्म–मृत्यु और काल से परे हो। अतिमानसिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए आंतरिक तीव्र अभीप्सा, दैहिक, प्राणिक और मानसिक अंगों का दिव्य के प्रति पूर्ण समर्पण और दिव्य द्वारा उनका रूपान्तरण नितांत आवश्यक है। यही श्री अरविंद के सर्वांगयोग की पूर्व भूमिका है। मानसिक से अतिमानसिक ज्ञान पर एकाएक नहीं पहुंचा जा सकता है। आध्यात्मिक विकास क्रमिक अभिव्यक्ति के तर्क पर आधारित है। अतः आत्मरूपान्तरण के सोपानों को पार करके ही अतिमानस अथवा दिव्यविज्ञान तक पहुंचा जा सकता है।

चौहान, रेनू (2019)[13], सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, एस.बी.डी. महिला महाविद्यालय धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.) ने अपने शोध लेख "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवाओं पर स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यानों की प्रासंगिकता" में उल्लेख किया है कि शिक्षा कैसी हो, इसके बारे में स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, 'शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि दिमाग में कई ऐसी सूचनाएं एकत्रित कर ली जाएं जिसका जीवन में कोई इस्तेमाल ही नहीं हो। हमारी शिक्षा जीवन निर्माण, व्यक्ति निर्माण और चरित्र निर्माण पर आधारित होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा हासिल करने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति से अधिक शिक्षित माना जाएगा जिसने पूरे पुस्तकालय को कंठस्थ कर लिया हो। अगर सूचनाएं ही शिक्षा होतीं तो फिर तो पुस्तकालय ही संत हो गए होते।' लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था ही बच्चों को रट्टू तोता बनाने वाली है जिसमें दिमाग का उपयोग ही नहीं किया जाता है।

शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए वे आगे कहते हैं, 'यूरोप के

कई शहरों की यात्रा करके मैंने यह देखा कि वहां के गरीब भी शिक्षित हैं और उनकी हालत हमारे यहां के गरीबों से बहुत अच्छी है। यह फर्क शिक्षा ने पैदा किया है। शिक्षा आत्मबल देती है।' लेकिन देश में अच्छी शिक्षा का मतलब ऐसी पदवी या नौकरी पाना है जोकि ज्यादा से ज्यादा रिश्वत कमाने में मददगार हो।

चौधरी, सुभाष (2021)[14], शोधार्थी राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय भीनासर बीकानेर, राजस्थान ने अपने शोध लेख में उल्लिखित किया कि स्वामी विवेकानन्द के अनुसार श्रम का महत्व व्यक्ति के जीवन में गीता अध्ययन से अधिक है। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता है न कि उपदेशों की। स्वयं की मदद स्वयं करनी होगी किसी से अपेक्षा रखना व्यर्थ है। जब तक जीवन है अनुभव ही विश्व में श्रेष्ठ शिक्षा है।

5. शोध समस्या का कथन

नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में महर्षि अरविन्द घोष की समन्वित शिक्षा एवं स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा सम्बन्धी शैक्षिक चिन्तन का समीक्षात्मक अध्ययन।

6. शोध उद्देश्य

1. महर्षि अरविन्द घोष के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
2. महर्षि अरविन्द घोष के दार्शनिक चिन्तन का अध्ययन करना।
3. महर्षि अरविन्द घोष के शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन करना।
4. स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
5. स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक चिन्तन का अध्ययन करना।

6. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन करना।
7. महर्षि अरविन्द घोष की समन्वित शिक्षा की रूपरेखा का अध्ययन करना।
8. स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा की रूपरेखा का समग्र अध्ययन करना।
9. नई शिक्षा नीति में सम्मिलित समन्वित शिक्षा तथा मानव निर्माण शिक्षा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।
10. नई शिक्षा नीति में वर्णित शिक्षा के विभिन्न अंगों के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द एवं महर्षि अरविन्द घोष के विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

7. शोध विधि

प्रस्तुत शोध दर्शन प्रधान होने के कारण इसमें ग्रन्थों तथा विद्वानों एवं विचारकों द्वारा लिखित प्रामाणिक साहित्य के लिये वर्णनात्मक, विवेचनात्मक तथा पुस्तकालय पर आधारित विधि का प्रयोग किया जायेगा साथ ही ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग समीचिन होगा।

प्रस्तुत शोध गुणात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आता है। शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में मुख्य रूप से दो प्रकार से अध्ययन किये जाते हैं।

(i) विचार प्रणाली का विश्लेषण।

(ii) किसी महान विचारक के दार्शनिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध में द्वितीय उपागम का प्रयोग किया जाता है।

8. शोध सीमांकन

प्रस्तुत शोध को मुख्यतः निम्नलिखित बिन्दुओं तक सीमित रखा जायेगा–

1. महर्षि अरविन्द घोष के शैक्षिक चिन्तन का विशेष रूप से अध्ययन करना

तथा उनके सम्पूर्ण शिक्षा दर्शन में निहित समन्वित शिक्षा का विशिष्ट अध्ययन करना।

2. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन का विशेष रूप से अध्ययन करना तथा उनके सम्पूर्ण शिक्षा दर्शन में निहित मानव निर्माण शिक्षा का विशिष्ट अध्ययन करना।

3. प्रस्तुत शोध में मुख्यतः महर्षि अरबिन्दो घोष व स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन का नई शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में केवल समीक्षात्मक अध्ययन किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 नई शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.–7।

2 वही।

3 नई शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.–8।

4 एस0एम0 बाखे (1982) ''लोकमान्य तिलक एवं स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन'', पी–एच0डी0 (शिक्षा), बम्बई विश्वविद्यालय।

5 सोती, शिवेन्द्र चन्द्र (1984) ''श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन'', पी–एच0डी0 (शिक्षा) मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ

6 पी0धर (1990) ''रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महर्षि अरविन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन'' पी–एच0डी0 (शिक्षा) एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

7 एच0 शंकर (1991) ''महर्षि अरविन्द एवं रूसो के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'', पी–एच0डी0 (शिक्षा), कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

8 आर0जे0 कौर (1992) ''श्री अरविन्द एवं महात्मा गाँधी के शिक्षा–दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में सार्थकता'' पी–एच0डी0 (शिक्षा), पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 1992

9 शर्मा, कु0 शबनम (1995) ''स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का आधुनिक भारतीय शिक्षा के संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन'' पी–एच0डी0 (शिक्षा) चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

10 सिरोही सुशीला, आधुनिक भारतीय संदर्भ में श्री अरविन्द एवं आचार्य रजनीश के शैक्षिक विचारों की उपादेयता एक तुलनात्मक अध्ययन। एम0फिल0 शिक्षाशास्त्र, लघु शोध प्रबन्ध, अप्रकाशित, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा, वर्ष 2007।

11 हृदयेश कुमार (2008) स्वामी विवेकानन्द व महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, एम0फिल0, शिक्षा विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

12 https://www.allresearchjournal.com/archives/2016/vol2issue3/PartB/2-2-103.pdf

13 रिव्यू ऑफ रिसर्च, यू.जी.सी. अप्रूव्ड जर्नल इम्पेक्ट फेक्टरः 5.76, वॉल्यूम–8, अंक–7, अप्रैल 2019 आईएस.एसएन.–2249894X ।

14 शिविरा पत्रिका, वर्षः 61, अंकः 07, जनवरी 2021, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर राजस्थान।